प्रथम अध्याय

भीष्म साहनी : साहित्यिक परिचय : "व्यक्तित्व और कृतित्व"

- अनुक्रमणिका -

1.1 प्रस्तावना

1.2 भीष्म साहनी व्यक्ति जीवन -

1.2.1 जन्म

1.2.2 परिवार

1.2.3 बचपन

1.2.4 शिक्षा

1.2.5 नौकरी/व्यावसाय

1.2.6 मित्र/गुरु

1.2.7 शौक/आदतें

1.2.8 पुरस्कार/सम्मान

1.3 भीष्मजी का व्यक्तित्व -

1.3.1 सादगी

1.3.2 सहनशीलता

1.3.3 सेवा भाव

1.3.4 भीष्म साहनी : समकालीन साहित्यकारों की नजर से

1.3.5 भीष्म साहनी : अपनी पत्नी के नजर से

1.3.6 भीष्म साहनी की साहित्य सृजन प्रेरणा

1.4 भीष्म साहनी : कृतित्व

1.4.1 प्रस्तावना - भीष्म साहनी की रचनाओं की सूची

1.4.2 भीष्मजी की कहानियाँ

1.4.3 उपन्यास

1.4.4 नाटक

1.4.5 अनुवाद

1.4.6 जीवनी

1.4.7 निबंध

1.4.8 बाल साहित्य

1.4.9 पत्र - पत्रिका

1.5 निष्कर्ष

1.6 संदर्भ सूची

प्रथम अध्याय

भीष्म साहनी : व्यक्तित्व और कृतित्व

1.1 **प्रस्तावना :-** हिन्दी कथा साहित्य का विकास और यथार्थवादी रचना प्रेमचंद द्वारा प्रारंभ हुई। राष्ट्रीय जीवन की परिवर्तनशीलता के साथ हिन्दी साहित्य में कल्पना एवं संरचना की दृष्टि से भी परिवर्तन होते गये। ज़िंदगी को देखने-समझने की तथा आँकने की व्यापक और संतुलित दृष्टि के साथ जीवन मूल्यों में भी परिवर्तन आये। आजादी के बाद प्रेमचंद के सामाजिक यथार्थ की तर्कशक्ति को तोडने का प्रयास किया गया। इसमें आधुनिक लेखकों का बड़ा सहयोग मिला। जोशी तथा जैनेंद्रजी ने इसे मनोवैज्ञानिक बना दिया, रेणू, नागार्जुन, भैरवप्रसाद गुप्त जी ने लोकवादी बना दिया। तो यशपालने इसे समाजवादी बना दिया। इसी परंपरा में "भीष्म साहनी" यह नाम भी जुड़ जाता है।

भीष्म साहनी हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील परंपरा के शक्तिशाली लेखक हैं। इनके साहित्य में भारतीय जनता की आज़ादी के यथार्थवादी तर्क साहित्य का, जीवन सिध्दान्तों का, समाज के भीतर चलनेवाले व्यक्ति संघर्षों का मार्मिक चित्रण है। साहित्यकार और विचारक के रुप में उनका स्थान उल्लेखनीय है। उनके साहित्य में सामन्तवाद, पूँजीवाद, वर्णभेद, धर्माडम्बर मध्यमवर्ग, शोषित वर्ग, शोषक वर्ग की संस्कृति का चित्रण मिलता है। सांप्रदायिकता के भौतिक परिवश का उद्घाटन उन्होंने यथार्थ रुप में किया है। जिससे एक ओर सामाजिक जीवन की वास्तविकता को प्रभावी बना दिया है, तो दूसरी ओर क्रान्ति और मुक्ति की सक्रिय निरंतर प्रक्रिया को उद्घाटित किया है। राष्ट्रीय भावात्मक एकता की कामना उन्होंने अपने साहित्य में की हैं। उन्होने समाज में व्याप्त अहं, धर्माभिमान, द्वेष, मत्सर का चित्रण कर हमारी कमियों की ओर संकेत कर हमें मानवतावादी दृष्टिकोण के लिए प्रेरणा दी हैं।

भीष्मजी के शान्त और शालीन व्यक्तित्व में महान मानवता के दर्शन होते हैं। उनका

साहित्य जीवन की वैचारिक ऊँचाइयों के दर्शन करा देता है। भारत के मध्यवर्ग का मन अभी तक आधुनिकरण की धर्म निरपेक्ष लोक भावना एवं चेतना से विरत है। जिसे बदलने का रचनात्मक प्रयास इन्होंने प्रभावी ढंग से किया हैं।

1.2 भीष्म साहनी : व्यक्ति जीवन :-

1.2.1 जन्म :- भीष्म साहनी का जन्म रावलपिण्डी (पाकिस्तान) में 8 अगस्त, 1915 में हुआ। इनके पिता का नाम हरवंशलाल और माता का नाम लक्ष्मी देवी था। प्रसिध्द सिने अभिनेता बलराज साहनी इनके बड़े भाई है। अनेक संस्कारों से भीष्मजी का जीवन फूलाफला हैं।

1.2.2 परिवार :- व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करनेवाला एक सशक्त घटक होता है, उसका परिवार। पारिवारिक जीवन अनेक संस्कारों से युक्त होता है। भीष्मजी ने अपने पारिवारिक जीवन के बारे में लिखा है - "पिताजी ने जिंदगी गरीबी में शुरु की। वह आशावादी, पुरुषार्थ प्रेमी आर्य समाजियों में से थे, जो उन्नीसवीं शताब्दी के अंतीम चरण की उपज माने जाते हैं। जिन्हें विश्वास था कि मनुष्य का चरित्र अच्छा हो, वह कर्मशील हो तो अपने भाग्य का निर्माण स्वयं कर सकता है। घर के अंदर संध्या के मंत्र गुंजते थे। ईश्वर स्तुती के भजन गुंजते थे। घर के सदाचार के भी नियम थे।

सादापन जीवन, सजावट मृत्यु है।
सदाचार जीवन, दुराचार मृत्यू है।"[1]

भीष्मजी के परिवार में सादगी पर जोर था। आज्ञापालन का कठोरता से पालन करना पडता था। उनकी माँ का नाम लक्ष्मी देवी था। इनकी माता साक्षात नाम की तरह लक्ष्मी ही थी। वह धार्मिक थी। सेवा, प्रेम और त्याग की साक्षात मूर्ति थी। उनकी वात्सल्य और ममतामयीं गोद में भीष्मजी का बचपन फला-फूला। उनके जन्म से पूर्व उनकी तीन बहने स्वर्गसिधार चुकी थी। उनके बचपन में एक बहन और जब वे कॉलेज में पढ़ते थे तो पाँचवी बहन ने विदा लेली। घर में केवल वे दो भाई थे। उन्हें सिखाया था कि दोनों को राम लक्ष्मण जैसा रहना चाहिए। उन्होंने कहा है "घर में सबसे छोटा होने के कारण सभी हुक्म मुझ तक पहुँचते थे। बड़े भाई के साथ कदम मिलाकर नहीं चलते पीछे-पीछे चलते हैं। जैसे राम लक्ष्मण चला करते थे। चुनाँचे कभी भूल से भी साथ साथ चलने लगता खुद ही धकेलकर पीछे करा दिया करते थे।"[2] तो इसी आदर्श परिवार में भीष्मजी ने अपने व्यक्तित्व को बना लिया हैं।

1.2.3 बचपन :- व्यक्तिका बचपन लड़कपन में शरारत करने में अँगडाई लेते-लेते गुजर जाता है। लेकिन भीष्मजी का बचपन ऐसा नहीं था। स्वयं उन्होंने अपने बचपन के बारे में कहा है - "बचपन का माहौल अँधेरी गुफा-जैसा लगता है। मैं अकसर बीमार रहता था। और उस खेल-कूद से वंचित था,

जो बचपन का अधिकार है। खाटपर पड़ा सरकती धूप को देखता रहता, गली में गुजरते फकिरों, भिखमंगों, खोमचेवालों की आवाजें सुनता रहता।"[3] शायद इसी एकाकीपन के कारण वे लेखक बने। मन की अन्तःचेतना में छिपी अभिव्यक्ति साहित्य के रुप में प्रकट हुयी।

भीष्मजी के पिता कट्टर आर्य समाजी थे। स्वाभाविक है कि इसी वातावरण का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। मुसलमान बच्चें उनकी दृष्टि में "म्लेच्छ" समझे जाते थे। बचपन और धर्म भेद यह उनकी कल्पना के बाहर की बातें थी। उन्होंने स्वयं ही कहा है - "बचपन में मनुष्य विरोधाभासों को नही देख पाता। बचपन और धर्मभेद शायद मनुष्य के मानसिक विकास का अर्थ ही इन विरोधाभासों को देख और समझपाना है। अब सोचता हूँ कि यह विरोधाभास बहुत ही भयानक था कि बचपन में ही मन में रेखाएँ खिंच जायें कि तुम "हिन्दू" हो, वह "मुसलमान" है, मैं आर्य हूँ, वह "म्लेच्छ" है।"[4]

भीष्मजी ने बचपन से जो देखा है, भोगा है, उसे ही अपने साहित्य में अंकित किया हैं। उनके संस्कार और अनुभवों का यथार्थ चित्रण उन्होंने किया है। अपनी रुढ़ि परंपरा का, अपने माता-पिता के विचारों का उन्होंने विरोध भी किया है। उनके बंधनों को तोड़ वे मुसलमानों के बच्चोंके साथ मित्रता करते या खेलते थे। और उनके बचपन के दोस्त तो खासकर गरीब लड़के ही हुआ करते थे। उन्होंने अपने दर्द भरे बचपन के बारे में कहा है, "मेरे बचपन ने मुझे और कुछ दिया हो या नही दिया हो, पर थोड़ा दर्द जरुर दिया है। धनी परिवारों के बच्चों का जैसा तिरतासा बचपन मेरा नही था।"[5]

1.2.4 शिक्षा :-भीष्मजी की आरंभिक शिक्षा गुरुकुल पोठोहार में हुयी। दो वर्षों के बाद स्थानीय डी.ए.वी. स्कूल में दाखिल हो गये। 1931 में मॅट्रिकुलेशन और 1933 में इंटरमीडियेट की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। 1933 में लाहौर चले गये। वहीं गवर्नमेंट कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में एम्.ए. किया। 1937 में एम्.ए. की परीक्षा पास करने के बाद पिताजी के साथ व्यापार करने लगे।

जब वह विद्यार्थी दशा में थे तो देश में चारों तरफ स्वातंत्र्य की मांग हो रही थी। बाहर जुलुस निकल रहे थे। गांधीजी की आवाजपर लाखों लोग घर-बार छोड़कर राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग ले रहे थे। उन्होंने कहा है "मैं स्कूल में था, जब भगतसिंह और उसके साथी फाँसीपर झूल गये थे। जितेनदास 63 दिन की भूख-हड़ताल के बाद दम तोड़ गया था। इन्हीं दिनों जेल के सीखंचों के पीछेसे एक कवि की आवाज सुनाई दी -

"हमने जब वादी-ए गुरबत में कदम रखा था,
दूर तक याद-ए-वतन आयी थी समझाने को।"[6]

इसतरह भीष्मजी ने अपनी शिक्षा राष्ट्रीय उथल-पुथल के वातावरण में पूरी कर दी।

शिक्षा के क्षेत्र में उन्हीं-दिनों कालिज में चारों ओर अंग्रेजी का बोल बाला था। उनके सभी साथी बड़े बड़े सरकारी अफसर बनने के सपने देखते थे। शायद उन्होंने "अंग्रेजी" विषय में एम्.ए. की परीक्षा पास की। अब लेखन हिन्दी भाषा में करते रहे हैं।

बाद में उन्होंने पी-एच्.डी. उपाधि भी हासिल की।

1.2.5 नौकरी तथा व्यावसाय :- एम्.ए. की परीक्षा पास करने के बाद पिताजी के साथ व्यापार करने लगे। इसी कारण शिक्षा भी रुक गयी और सरकारी अफसर बनने का सपना भी टूटा। लेकिन गांधीजी के विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने ईमानदारी के साथ उत्साह से अपना काम शुरु कर दिया। लेकिन जल्द ही उन्होंने अनुभव किया कि एजेंसी का काम करना सचमुच बड़ा कठिन है। मुनाफा कमाना, स्वयं माल खरीदकर मुनाफे पर बेचना उन्हें मंजूर नहीं था। वे व्यापार के क्षेत्र में व्यवहार की दुनिया में अपने अरमान पूरे करने के लिए निकम्मे साबित हुए।

इसी समय स्थानीय डी.ए.वी. कॉलेज में ऑनरेरी तौर पर पढ़ाते थे। नाटक में अभिनय भी करते थे। साथ में कांग्रेस का काम भी करते थे। 13 अगस्त, 1947 को वे दिल्ली चले आये। कुछ समय बम्बई में अपने बड़े भाई के साथ रहे। अंबाला के एक कॉलिज में नौकरी भी की। 1949-50 में दिल्ली गये। वहाँ युवा रचनाकारों की एक साप्ताहिक गोष्ठी में नियमित रुपसे भाग लेने लगे। इसी समय दिल्ली कॉलिज में कार्यरत हो गये।

1957 में भारत सरकार की ओर ये भीष्मजी का चुनाव सोवियत संघ में अनुवादक के रुप में हुआ। वहाँ सात बरस तक काम करते रहे। 1963 में भारत लौटनेपर फिर दिल्ली कॉलिज में पढ़ाने लगे। 1965-1967 तक "नई कहानियां" का संपादन किया। सन 1980 में अध्यापन से अवकाश प्राप्त कर स्वतंत्र लेखन में जुट गये।

1.2.6 मित्र :-भीष्मजी के मित्र गरीब लड़के हुआ करते थे। और संतोष पाते थे कि वे उन मित्रोंसे बेहतर और बड़े थे। उन्होंने मुसलमान लड़कों के साथ दोस्ती की। उन्होंने भाई के दोस्तों और अध्यापकों के साथ भी दोस्ती की। उनके मित्रों को घर में मान सम्मान भी मिलता।

उनके बचपन के दोस्त थे बरकतराम, हरबंसलाल, रोशनलाल, धर्मदत्त आदि जो अब इस दुनिया में नहीं रहे हैं।

कॉलेज के दिनों में बहुत गहरी दोस्ती किसीसे भी नहीं थी। इल्ताफ हुसेन नामक एक दोस्त था जो बहुत खूबसुरत तस्वीरें बनाता था।

लाहौर चले आने के बाद अनेक दोस्तों के साथ अपने सुख पूर्ण क्षण बिताए। पंजाब में भी

अनेक दोस्त मण्डली थी। बड़े भाई बलराज के बम्बई चले जाने के बाद, उनके जो दोस्त थे वे भी भीष्मजी के दोस्त बन गये। जिनसे उनकी जानकारी बढ़ी, उनके व्यक्तित्व का विकास होता रहा। वे स्वयं कहते है कि "हम उम्र लोगों में जो खुलापन होता है उससे व्यक्ति के विकास में बड़ी मदद मिलती है। मैं सारा वक्त उनसे प्रभावित होता रहता था और ज्यादा से ज्यादा अन्तर्मुखी होता जा रहा था। शायद उसी सोहबत का यह नतीजा है कि मैं हर मिलने वाले को अपने से बड़ा मानने लगता हूँ। यह वृत्ति आज भी मौजूद है।"[7]

उनके साहित्यिक मित्र तो काफी हैं। उनमें निर्मल, रामकुमार, नरेशकुमार, योगेश कुमार, मनोहर श्याम जोशी, अमृतराय, उपेन्द्रनाथ अश्क, कल्प बलदेव, आनंद स्वरुप, हंसराज रहबर, अंसारी आदि बहुत सारे। इन मित्रों मे साथ नयी-नयी किताबों की चर्चा होती थी।

मास्कों में भी उनके बहुत दोस्त थे। समकालीन लेखकों में से मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, शेखर जोशी, अमरकांत, कृष्णा सोबती, शानी आदि बहुत सारे दोस्त भी हैं। और एक साथ चर्चा तथा बहस भी करते हैं।

1.2.7 **शौक :-** खान-पान के बारे में उनका कोई विशेष आग्रह नही होता है। बचपन में उन्हें हॉकी खेलना, लम्बी सैर करना, तैराकी, घुमक्कडी आदि का भी विशेष शौक है। साहित्य, इतिहास, समाजशास्त्र आदि विषयों की पढ़ाई में विशेष रुचि रही है।

डिबेटिंग और स्टेज अभिनय में उन्हें विशेष रुचि थी। हॉकी तथा डिबेटिंग में दो-दो मैडल भी प्राप्त किए थे।

एक बार उन्होंने मूर्तिकला सीखने की कोशिश की। श्रीनगर में एक विदेशी महिला बढ़िया बुत बनाती थी और उनका सिखाने का ढंग भी बढ़िया था। उनका शौक जिसके कारण बढ़ा लेकिन फीस ज्यादा होने के कारण देर तक सीख नही सके।

बाजीगर और पहलवान बनने की भी तमन्ना थी। पढ़ाने का शौक तो उनका अपना खास शौक था। उन्होंने अध्यापन का कार्य पूरी लगन के साथ किया है।

घर का कामकाज करना, पत्नी की मदद करना उन्हें विशेष रुप से भाता है।

यात्रा करना उन्हें बहुत पसंद है। चित्र और कला प्रदर्शनियाँ देखना भी पसंद है।

1.2.8 **पुरस्कार/सम्मान :-** भीष्म साहनी अपनी सफल जिंदगी में अनेक सम्मानों से विभूषित हुए हैं।

1975 में भाष्म विभाग पंजाब द्वारा "शिरोमणि लेखक" पुरस्कार से विभूषित हुए।

1975 में "तमस" उपन्यास पर "साहित्य अकादमी पुरस्कार" प्राप्त हुआ। 1980 में ऐफ्रो-

एशियाई लेखक संघ की ओर से "लोटस" पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1979-80 में "दिल्ली साहित्य कला परिषद" द्वारा सम्मानित किया गया। 1985 में उपन्यास 'बसंती' "उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' से पुरस्कृत हुआ।

1990 में हिन्दी उर्दू साहित्य पुरस्कार तथा 1990 में 'मय्यादास की माडी' उपन्यास के लिए हिन्दी अकादमी दिल्ली से पुरस्कार प्राप्त हुअे।

'हानूश' तथा 'कबिरा खड़ा बाजार' में नाटक पर इनाम मिले। उनकी अनेक पुस्तकों के विविध भारतीय तथा विदेशी भाषा में अनुवाद हैं।

वे प्रगतिशील लेखक महासंघ तथा ऐफ्रो-एशियायी लेखक संघ से वे सम्बध्द रहे हैं।

नाटकों तथा फिल्मो में अभिनय भी किया है। 'भूतगाड़ी', 'तमस', 'मोहन जोशी हाज़िर हो' इनमें उन्होंने अभिनय किया है।

1.3 व्यक्तित्व :-

1.3.1 सादगी :- भीष्म जी का पूरा व्यक्तित्व सादगी से ओत-प्रोत हैं। उनके रहन-सहन और सलीके में इसके दर्शन होते हैं। वे अत्यधिक विनम्र हैं। उनकी विनम्रता के बारे में उनकी पत्नीने कहा है - "भीष्मजी की एक बात है जो अब तक मुझे अच्छी नहीं लगती, उनकी अत्यधिक विनम्रता। विनम्र होना अच्छी बात है, परंतु अति विनम्र होना तो अच्छा नहीं। लोग नाजायज फायदा उठाते हैं।"[8]

1.3.2 सहनशीलता :- उनमें सहनशीलता बहुत ज्यादा है। उनका स्वभाव बेहद नम्र हैं। उनका स्वभाव शांत, विनशीयल है। उनमें धैर्य और उदारता मौजूद हैं। अत्यंत कोमल, शालीन और मितभाषी आत्मा उन्होंने पायी है। उनके चेहरे पर एक खास सौम्यता और आखों में करुणा पूर्ण भावोंके दर्शन होते हैं।

उनका व्यक्तित्व संयत, गंभीर और विवादों से अलग है। वे अकुंठित और अजातशत्रु है। भीष्म साहनी संवेदनशील व्यक्ति है।

1.3.3 सेवाभाव :- भीष्मजी का एक विशेष गुण है सेवाभाव। विद्यार्थी अवस्थासे उन्होंने समाजसेवा की है। राष्ट्र भक्ति एवं प्रेम उनके व्यक्तित्वमें ओत-प्रोत हैं। उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भाग भी लिया है।

हिन्दुस्थान में व्याप्त अंधश्रध्दाएँ, जात-पात, उच्च-निच भाव, रुढियाँ, अस्पृश्यता, छुआ-छुत आदि परंपराओं के प्रति विरोध प्रकट किया है। उनकी धारणा है कि धर्माडम्बर, अहंकारी वृत्ति समाजहित में बाधक होती है। गरीब, असहाय, उत्पीड़ित व्यक्तियों के प्रति उनके मनमें सहानुभूति है।

उन्होंने कहा है "यही तो हमारी कौम में कमजोरी है। ब्याह-शादी में तो लाखों बहा देंगे, पर जब कौम पर खतरा मँडराने लगे तो पैसे गिनने लगते हैं।[9] उन्होंने समाजमें व्याप्त स्वार्थी वृत्ति का अंकन कर उन्हें त्याग देने का संकेत किया हैं।

वैसे तो समाज के प्रति हर एक लेखक का जो दायित्व होता है, उसे अच्छी तरह से उन्होंने निभाया है।

1.3.4 भीष्म साहनी : साहित्यकारों की नजर से :-

भीष्म साहनी प्रगतिशील परंपरा का यथार्थ चित्रण करनेवाले सशक्त साहित्यकार है। समकालीन साहित्यकारोंकी नजर में उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलु प्रकट हुए हैं -

विष्णु प्रभाकरजी ने लिखा है - "भीष्म साहनी को मैंने एक पाठक की दृष्टि से पढ़ा है। उनकी कहानियां केवल भावनात्मक स्तर पर ही प्रभावित नहीं करती, बल्कि हमारे संस्कारोंपर गहरे चोट करती है। इस मामले में मैं भीष्म को यशपाल से उपर मानता हूँ। खासकर विभाजन की त्रासदी को लेकर उन्होंने जिन चरित्रोंका निर्माण किया है उसमें बड़ी खूबी के साथ सारी स्थितियां सहज भाव से आती है।

भीष्म साहनी बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति है। इसका असर उनके साहित्य में देखने को मिलता है। उनके सरल और सौम्य व्यक्तित्व के कारण ही उनपर मार्क्सवाद उस रुप में हावी नहीं है, जैसा अन्य वामपंथी लेखकों में देखने को मिलता है।"[10]

डॉ. नामवर सिहंजी के मतानुसार "जीवन की विडम्बनापूर्ण स्थितियों की पहचान भीष्म साहनी में अप्रतिम है। आधुनिक महानगरों में पलनेवाली अमानुषिक घृणा पुराने जमाने की सरल घृणा से कितनी अलग है।"

"प्रेमचंद की तरह उनकी सृजनात्मक प्रतिभा कहानी विद्या के अंदर अधिक कलात्मकता के साथ व्यक्त हुयी है।"

"हिन्दी में नारी मुक्ति के प्रश्न पर लिखा हुआ 'माधवी' जैसा मार्मिक नाटक मेरे देखने में नहीं आया। उनके नाटकों के लिए उपयुक्त रंगमंच मिले तो यह प्रमाणित हो जायेगा कि उनमें मोहन राकेश से कहीं बड़ी नाटय प्रतिभा है।

"भीष्म साहनी वर्तमान जगत के उन थोडे लेखकों में से है जो सच्चे अर्थों में धर्म निरपेक्ष और प्रतिबध्द हैं। वे अपनी रचनाओं में आस्था का ढ़ोल नहीं पीटते। उनके सौम्य, शालीन, सहज और विनम्र व्यक्तित्व के साथ विचारों की दृढ़ प्रतिबध्दता इतनी घुलमिल गयी है कि कभी कभी उसके बारे में भ्रम भी होता है। बिना आक्रामक हुए भी कोई लेखक प्रतिबध्द हो सकता है इसकी सर्वोत्तम मिसाल भीष्म साहनी है।"

"इस पचहत्तर वर्ष की उम्र में वे श्रम और साधना में किसी भी युवा लेखक से युवतर दिखायी पड़ते है। उनकी शक्ति का मूल स्त्रोत क्या है, यह मेरे लिए हमेशा कौतुहल और आश्चर्य का विषय रहा है।"[11]

राजेंद्र यादव का कहना है "मेरी दृष्टि में भीष्म साहनी सहज मानवीय उष्मा के संवेदनशील कथाकार है। प्रेमचंद भी इसी प्रकार सहज मानवीय भावनाओं के रचनाकार है। हालांकि प्रेमचंद की अपेक्षा उनका कलात्मक पक्ष ज्यादा मजबूत है।"

"आदमी में जो गुस्सा होता है, वह गुस्सा भीष्म साहनी में नहीं दिखायी देता। इसलिए उनकी प्रतिक्रिया या उनका प्रतिरोध उतना तीव्र नहीं है, जितना हमे यशपाल, मंटो या पंजाब की विभाजन की त्रासदी से गुजरे हुए अन्य रचनाकारों में दिखाई देता है।"

"भीष्म साहनी का समग्रता में अभी मूल्यांकन नहीं हुआ है। अब तक उनके पूरे कथा साहित्य को, पूरी मानसिक बनावट को एक गहरी अर्न्तदृष्टि के साथ समझने की कोशिश नहीं हुई है।"[12]

कमलेश्वरजी के मतानुसार"भीष्म साहनी ने अपने कथा साहित्य में जीवन की सच्चाई को बहुत ही गहराई और सघनतासे पेश किया है। संवेदनासे भरे चरित्र और स्थितियों में छिपा हुआ इतिहास और समाज का दंश - को उद्घाटित किया है।"

"सांप्रदायिक वैमनस्य को लेकर जो कुछ अनुभव भीष्म के है वो प्रेमचंद से ज्यादा गहरे है। भीष्म ने उस भयानक नरसंहार को खुद देखा है, सहा है, जिया है जब कि प्रेमचन्द के सामने वे अनुभव नही थे।"

विचारधार के स्तरपर भीष्म साहनी मार्क्सवादी है। उन्होंने लगातार अपने शिल्प को तोड़ा है। उन्होंने जो सहजता इस समय के अन्तराल में रचनाकार के रुप में प्राप्त की है, वह बड़ी विरल चीज है।"[13]

शानीजी का कहना हैं, "भीष्म साहनी अपने संपूर्ण लेखन में चाहे वह कहानी हो या उपन्यास या नाटक सीधे जनता खासकर आम जनजीवन से जुड़े रहे है। लेखक का सबसे बड़ा दायित्व यही होता है कि बहुत सारे छुपे हुए जो पात्र हैं, जो समाज में देखे-अनदेखे रह जाते हैं लेखक उन्हे ढूँढ निकालता है। भीष्म साहनी ने भी वही किया है।"[14]

कृष्णा सोबती की नजर में "जिने के स्तरपर भीष्म के पास एक सुथरा, सुरक्षित, मजबूत चौखटा है जिसने भीष्म के समूचे लेखन और काफी हद तक जीवनदृष्टि को भी प्रभावित किया है। उनकी अपनी राजनीतिक आस्थाएँ हैं। उनके रहन-सहन और सलीके में भी आप यही अन्दाज देख

सकते हैं। लेखक के व्यक्तित्व को रुमान बनानेवाली चोंचले और किसी हदतक जरुरी साजसामान भीष्म के यहाँ गैरहाजिर है।"

भीष्म को एक में तीन जैसी बेनयाज बीवी मिली हुई है। बीवी - प्रेमिका - पाठिका, थ्री इन वन।"[15]

1.3.5 भीष्म साहनी : अपनी पत्नी की नजर में :-

"पति के रुपमें मेरी भीष्मजी के खिलाफ कोई शिकायत नहीं। भीष्मजी बहुत ही अच्छे पति है, बहुत ही Considerate, गुस्सा उन्हें कभी नहीं आता और कोई बात इन्हें खिझाती नहीं। उनमें सहनशीलता बहुत ज्यादा है। उनकी Sence of humar बहुत ही बढ़िया है। इनमें काम करने की बहुत ज्यादा capacity है। घंटों काम करते रहते हैं।"[16]

"वे पति के रुपमें बहुत अच्छे हैं, परंतु व्यावहारिक बिल्कुल नहीं है। इनकी अच्छाई का सभी नाजायाज लाभ उठाते हैं। मैं तो इनकी विनम्रता से परेशान हूँ। इनकी विनम्रता का लाभ दूसरे लोग उठाते हैं और उससे तकलीफ मुझे होती है। वे साधु हैं, कर्मयोगी हैं, निष्काम कर्मयोगी हैं, ये सारी बातें तो बड़ी ऊँची है, परंतु बीवी के लिए यह कमाल की बातें नहीं होती, बल्कि मुसीबत होती है। उन्हें हुक्म लेना खूब आता है, देना नहीं आता। वे खुद मेरे साथ खाना बनाते है, ये कुछ भी करते हुए कभी नहीं थकते।"

भीष्मजी और शीलाजी की पहली मुलाकात के बारेमें शीलाजी कहती है - "रावलपिण्डी में मेरे पिताजी पुलिस में थे। भूतगाड़ी नामक भीष्मजी का नाटक देखने के लिए पिताजी मुझे ले गये। यह नाटक मुझे काफी अच्छा लगा। इसमें उन्होंने अभिनय भी अच्छा किया था।"

"मैं रावलपिण्डी में डी.ए.वी. कॉलेज में बी.ए. (तृतीय वर्ष) की छात्रा थी, वहीं अंग्रेजी पढ़ाते हुए उनसे पहली मुलाकात हुयी। मैं कॉलेज सायकल से जाती थी और भीष्मजी बहुत सीधे-सादे, बहुत चुप और गंभीर रहनेवाले प्राध्यापक थे। जब, कि मैं काफी चंचल थी।"[17]

1.3.6 भीष्म की साहित्य सृजन प्रेरणा :-

आदमी का व्यक्तित्व उभरते समय अनेक संस्कारों के कारण वह प्रेरित होता है। घर-परिवार, समाज, गुरु, मित्र, घटनाएँ, शत्रू आदि के द्वारा उसका व्यक्तित्व पनपने लगता है। भीष्म साहनी जैसे महान लेखक पर जिन घरेलू जिंदगी के संस्कार हुए, उनकी वजह से उन्हें साहित्य सृजन की प्रेरणा मिली। समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं के कारण उनका साहित्य उभरता गया।

उन्होंने कहा है "घर का माहौल एक खास तरह का माहौल था। इसमें ब्रहमचारी की पीली धोती थी। हवन संध्या और उपदेश थे। यहाँ मांस खाना निषिध्द था, स्त्री की ओर आँख उठाकर

देखना निषिध्द था, उपन्यास पढ़ना फिल्म देखना निषिध्द था।

स्कूल छोडनेपर एक ऐसे व्यक्ति से साक्षात्कार हुआ जिसने मेरी दुनिया बदल दी। वह गोरा-चिट्टा, स्वस्थ, सौम्य-सुन्दर व्यक्ति था। इस व्यक्तिने मुझे दकियानुसी संकीर्ण, घुटन-भरे वातावरण में से खींचकर बाहर निकाल लिया। जसवंत राय का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था। उसे साहित्य से गहरा प्रेम था। कविता के मर्म समझाने में इसे विशेष पैठ थी। वह उस पीढ़ी का उदारवादी व्यक्ति था। जो मध्ययुगीन संस्कारों से स्वयं निकलकर छात्रों को भी निकालना चाहता था। उसका एक एक शब्द मेरे लिए वेदवाक्य था। उसी के प्रभावाधीन मैं साहित्य रचना में कलम-आजमाई करने लगा।"[18] अपने इस गुरु के कारण भीष्मजी ने साहित्य सृजन की प्रेरणा ली।

व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावी बनाने में तत्कालीन स्थिति का बड़ा योगदान रहता है। भीष्मजी युवा थे तभी आज़ादी का आन्दोलन जोर पकड़ रहा था। देश में राजनीतिक हलचल तेज थी। दूसरे विश्व युध्द की हवा चल रही थी। देश में सांप्रदायिकता का संकीर्ण वातावरण बनता जा रहा था। इसका असर उनके मनोमस्तिष्क को मथने लगा। जो साहित्य के रुप में प्रकट हुआ।

उन्होंने अपने बारे में कहा है - "घरमें साहित्यिक वातावरण पहले से था। पिताजी शोख सादगी के प्रेमी थे। माँ के पास कहानियों, गीतों, लोकोक्तियों का खजाना था। बड़े भाई कॉलेज के दिनों में अंग्रेजी और बाद में हिन्दी में लिखने लगे थे। मेरे बुआ की बेटी श्रीमती सत्यवती मलिक का घर साहित्यिक केंद्र सा बना हुआ था।" इसी साहित्यिक माहौल में एक संवेदनशील व्यक्ति साहित्यकार न बनता तो अचरज की बात है।"[19]

भीष्म साहनी को पढ़नेका शौक बहुत था। उन्होंने प्रेमचन्द, जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, सुदर्शन का साहित्य पढ़ा और उससे वे बहुत प्रभावित हुए। तथा इसी क्षेत्र की ओर आकर्षित होते गये। "विशाल भारत" और "हंस" हिन्दी पत्रिका में लेख भेजने लगे। पंचतंत्र, हितोपदेश, प्राचीन-अर्वाचीन बहुत सारा साहित्य उन्होंने पढ़ा। तुलसी, सूर की अपेक्षा वे कबीर से अधिक प्रभावित थे।

विदेशी साहित्यकारों की कविता एवं अन्य साहित्य से भी वे प्रभावित हुए हैं। कीट्स, डयूमा, विक्टर हयूगो, ताल्सतॉय, चेखव उन्हें विशेषतः बहुत ज्यादा पसंद है। कैथरीन मेन्सफील्ड, मोपासां, गोर्की ने भी उन्हे प्रभावित किया है। तथा भीष्मजी के अपने गुण भी उन्हें प्रेरित करते हैं। वे स्वयं सजगदृष्य भोक्ता और आलोचक हैं। उनके पास सूक्ष्म दृष्टि है। जो अनेक घटनाओं को देख उन्हें अलौकिक बना देती हैं। उनकी कल्पना एवं प्रतिभा सजग हैं। उसमें जागरुकता तथा संवेदनशीलता हैं। उनकी बुध्दि बहुत ही तीव्र और तर्कसंगत हैं। हित, अहित, भला-बुरा, जानने की क्षमता उनमें है। उनकी उदात्तता बहुत ही महान है। जिसके आधार पर उन्होंने साहित्य सृजन किया है।

1.4 भीष्म साहनी : कृतित्व :-

1.4.1 प्रस्तावना :- भीष्म साहनी मुख्यतः प्रगतिशील परंपरा के महान लेखक है। उनके समग्र साहित्य में परिवेश की समग्रता अंकित है। भारत के नगरों और महानगरों में रहनेवाला मध्य वर्ग उनका कथा केंद्र है। इस समाज में वर्णवादी, जातीय भेदभाव और सांप्रदायिकता का मूल कारण क्या है? धर्म के नामपर कौन कौन सी शक्तियाँ अपना मुनाफा पा लेती है? सामुदायिक हत्या क्यों की जाती है? हिन्दु -मुस्लिम-सिक्ख-इसाई भाई-भाई बनकर क्यों नहीं रह पाते? साम्राज्यवाद की साजिशें कौनसी हैं? इनके कथा संदर्भ में सामन्तवाद और पूंजीवाद के अन्तर्विरोध, वर्ण और वर्ग के अन्तर्विरोध, मध्यवर्ग के आन्तरिक अन्तर्विरोध तथा पुनरुत्थानवाद और आधुनिकतावाद के अन्तर्विरोध क्रमशः खुल जाते है।

"भारतीय पूँजी की आकांक्षाओं में पलनेवाली उपभोक्ता संस्कृति तथा उसके विरुध्द भारतीय जनता के श्रमसे उत्पन्न होनेवाली लोकतांत्रिक जनवाद की संस्कृति का संघर्ष भीष्म सहानी की रचनाओं में अन्तःस्त्रोत की तरह प्रवाह मान है।"[20]

भीष्म साहनी सामाजिक जीवन के यथार्थ को प्रभावपूर्ण ढंग से उद्घाटित करते है। उनका साहित्य सानुभूतिपरक और वास्तविक है। उनके शांत और शालीन व्यक्तित्व के जैसी ही उनकी रचनाएँ है। उन्होंने अपनी रचनाओं के बारे में कहा है, -

"साहित्य के क्षेत्र में मेरे अनुभव वैसे ही सपाट और सीधे-सादे ही रहे जैसे जीवन में। मैं समझता हूँ अपने से अलग साहित्य नाम की कोई चीज भी नहीं होती। जैसा मैं हूँ, वैसी ही मैं रचनाएँ भी रच पाऊंगा। मेरे संस्कार, अनुभव, मेरा व्यक्तित्व, मेरी दृष्टि सभी मिलकर रचना की सृष्टि करते है। इनमें से एक भी झूठी हो तो सारी रचना झूठी पड़ जाती है। प्रत्येक रचना मेरी समझ में, एक ईकाई होती है, संश्लिष्ट और अटूट, जिसमें से कुछ भी अलग नहीं किया जा सकता। न विचार, न शिल्प, न शब्द - सभी के सामंजस्यसे ही उसका अस्तित्व बनता है। इनमें न कोई साध्य होता है न साधक। यह ईकाई जीवन की कोख में से निकलकर आती है।"[21]

इस प्रकार भीष्मजी का साहित्य जीवन का साहित्य है। उनके संस्कारों का साहित्य है जो सत्य है, स्वानुभूतिपरक है। तन मन से निकलकर तनमन तक पहुंच तादात्म्य स्थापित करता है। उनकी दृष्टि मानवतावादी है। भाव, भाष्य, आचार-विचार, अभिव्यक्ति की प्रभावान्विति आदिपर उनका व्यक्तित्व छाया है। इस दृष्टि से भीष्मजी एक सफल और महान साहित्यकार हैं। उन्होंने इस प्रकार साहित्य लिखा है -

साहित्य सूची :-

1) **उपन्यास :-** 1)'झरोंखे'(1967). 2)'कडिया'(1970).
3)'तमस'(1973). 4)'वसंती'(1980)
5)'मय्यादास की माड़ी'(1988). 6)'हिन्दी उपन्यास'(संपादित).

2) **कहानी संग्रह :-** 1)'भाग्यरेखा'(1953). 2)'पहला पाठ'(1956).
3)'भटकती राख'(1966). 4)'पटरियाँ'(1973).
5)'वाड्.चू'(1978). 6)'शोभा यात्रा'(1981).
7)'निशाचर'(1983). 8)'पाली'(1989).
9) "मेरी प्रिय कहानियां", प्रतिनिधि कहानियां "और" हिन्दी कहानी संग्रह का संपादन भी किया है।

3) **नाटक :-** 1) 'हानूश'(1977). (2)'कबिरा खड़ा बजार में'(1981). (3)'माधवी'(1984).

4) **जीवनी :-**'बलराज माई ब्रदस'(1981).

5) **निबंध :-**'अपनी बात'(1989).

6) **बाल साहित्य :-** 'गुलेल का खेल'(1980). (2)'वापसी'.

7) **पत्र/पत्रिका :-** 'नई कहानियाँ' का संपादन (1965) अढाई साल तक.

8) **अनुवाद :-** लगभग 20 रुसी पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया है। इसमें टाल्सटाय का 'पुनरुत्थान' तथा लम्बी कहानियाँ नकीलाई आस्त्राव्स्की का 'जयजीवन', आइतमातोव का'पहला अध्यापक'प्रमुख हैं।

साहित्यकार भीष्मजी :- भीष्मजी की साहित्य रचना यथार्थता से सामाजिक जीवन की वास्तविकता को प्रभावशाली रुप में प्रकट करती हैं। वे समकालीन आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। उनकी बुध्दि-मूलकता, तर्क संगतता एवं वैचारिक उच्चता का परिचय उनके साहित्य से मिलता है। उपन्यास, कहानी, नाटक, जीवनी, निबंध, बाल साहित्य, अनुवाद से उन्होंने अपनी साहित्यिकता का, लेखन कौशल्य का अविष्कार कर दिया हैं। जो समाज के लिए उपयोगी सिध्द हुआ है।

1.4.2 भीष्मजी का कहानियाँ :-

1947 के बाद प्रमुख कथाकार के रुप में भीष्मजी का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है। पंजाब एवं रावलपिण्डी के क्षेत्र का वातावरण उन्होंने अपने कथाओं में अंकित किया है। जहाँ मुसलमान, सिक्ख, हिन्दु जैसे मिली-जुली संस्कृति को अपने अनुभूति के आधारपर चित्रित किया है। उनकी कहानियों में 'वाड्.चू', 'नया मकान','लीला नंदलाल की','चीफ की दावत' और 'अमृतसर आ गया है' जैसी कहानियाँ बहुत ही लोकप्रिय हुई है।

'नया मकान' शीर्षक कहानी में उन्होंने मध्यमवर्गीय युवक की मानसिकता का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। वह अपने आचरण में कुलीनों की नकल करता है। और संपत्ति की लालसा करता है।

'चीफ की दावत' कहानी में मध्यमवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं का चित्रण है। मध्यम वर्गीय लोगों की पाखण्डता की निरर्थकता स्पष्ट की है। बुढ़े लोगों की करुणा की ओर यह कहानी संकेत करती है।

'अमृतसर आ गया है' इस कहानी में सांप्रदायिकता का जहर व्यक्ति को कितना विषैला बना देता है इसका पूर्व दीप्ति शैली में मार्मिक चित्रण किया है। इसमें आदर्शवाद और मानवीयता का गला किस प्रकार मानव द्वारा ही घोटा जाता है, इसका हृदयग्राही चित्रण है जिसमें व्यंग्यात्मक प्रहार भी है।

'वाङ्.चू' कहानी का नायक न चीनी है न भारतीय वह एक मनुष्य हैं। राजनीति ने इसे संदेह की दृष्टि से देखा है और जीवन उसके लिए विडम्बन बन गया है।

'मालिक का बन्दा' में 'हवलदार' मंदिर बनवाने के लिए मालिक के इशारों से रेल तोड़ता है, मुसाफिरों को बेइज्जत करता है। भ्रष्ट काम करनेपर भी वह सुरक्षित है। 'अहंम् ब्रहमास्मी' भारतीय दर्शन के साथ पाश्चात्यों का अंधानुकरण से हमारी संस्कृति किस तरह नष्ट हो रही है इसका चित्रण है। अंग्रेजी किताब बेचनेवाला 'भाटिया' ऐसा ही व्यक्ति है जो आत्महीन हो चुका है। उसका रहन-सहन, आचरण कृत्रिम है। जब एक अंग्रेज औरत उसे भला-बूरा कहती है, गाली देती है, बेइज्जत कर देती है, तब वह भारतीय वेदान्त का सहारा लेकर ब्रहमांड का अंग बन जाता है।

'भगोड़े' कहानी में 'गजानन' कैसे जीवन की पुकार से साधनाविरत हो जाता है इसका चित्रण है। और मनुष्य का सत्य मनुष्य के हृदय में ही होता है यह स्पष्ट किया है। पिकनिक, राधा-अनुराधा, सागरमीट, त्रास, पटरियाँ, ललक, खंडहर, मौका-परस्त आदि कहानियों में अर्न्तविरोध को स्पष्ट किया है। समाज की विसंगतियाँ, शोषण, रीति-नीति आदि का विवेचन किया है। इसमें मनोवैज्ञानिकता एवं दार्शनिकता का परिचय भी दिया है।

1.4.2 भीष्मजी के उपन्यास :-

भीष्मजी ने अपने उपन्यास में द्वंद्वात्मक संघर्ष का प्रभावी चित्रण किया है। सामंतवाद, पूँजीवाद, भौतिकवाद एवं वर्गगत चित्रण तार्किक दृष्टिकोण से चित्रित किया है। जिससे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक भूमिका उद्घाटित होती है।

'झरोखें' (1967) उपन्यास में दलित व्यक्तित्व का चित्रण है। भय और पीड़ा से निर्मित

संस्कार अमानवीय होता है। वह चरित्र हत्या करनेवाला होता है। मनोविज्ञान के सजीव चित्रण से लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि वीर्यपात और स्वप्नदोष से भयग्रस्त तरुण अपना यथार्थ विकास नहीं कर पाता। धर्म और नीति के नाम पर जो व्यक्तिपर संस्कार किए जाते है वह अमानवीय होते है। जिस के कारण व्यक्ति का जीवन ग्लानी, हीनताग्रस्त बनता है।

"कड़ियाँ" उपन्यास में पारिवारिक परिवेश का हीनताग्रस्त जीवन चित्रित किया है। जो मध्यमवर्गीय संस्कार और संवेदन से संघर्ष कर जीवन को परिवर्तीत करता है। इस उपन्यास का महेन्द्र पाप-पुण्य को बकवास समझकर अपनी पत्नी प्रमिला को छोड सुषमा से प्रेम करता है। और आधुनिक संस्कारवाला समझता है। उसका यह व्यवहार सारे परिवार को तोड़ डालता है।

"तमस" उपन्यास तो उद्देश्य एवं रचनाशिल्प की दृष्टि से बढ़िया नाटक है। धर्म, राजनीति एवं सामाजिक चेतना का यथार्थ चित्रण इसमें है। एक ही नस्ल के लोगों (सिक्ख, हिन्दू, मुसलमान) की अराजकता व्यापकता के साथ चित्रित की है। मानव की अमानवीय व्यवहार का दर्दभरा चित्रण कर एकता की मांग यह उपन्यास करता है। अंग्रेज नीति की ओर भी व्यंग्यात्मक दृष्टि से देखा है। जो सांप्रदायिक शोकान्त के लिए कारण बनती है।

"बसंती" उपन्यास में भीष्मजी ने निम्नवर्गीय मैटमैले परिवेश को चित्रित किया है। उनकी सादगी, बदरंग जीवन को स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया है। जो गाँव सूखा, अकाल और भुखमरी से तंग आकर शहर आता है, जो बार बार बस कर उजड़ जाता है। दो विरोधाभास जिंदगी का वर्णन कर शोषक-शोषण, गरीब-श्रीमंत जैसे संघर्ष का चित्रण किया है। इस उपन्यास की नायिका "बसंती" स्वाभीमानी आत्मनिर्भर स्त्री है, वह सामंती और पूँजीवादी संस्कारों पर व्यंग्य करती है। उसमें साहस एवं मानवीयता है।

"मय्यादास की माड़ी" (1988) उनका आधुनिक उपन्यास इसमें भीष्मजी की परिपक्वता का परिचय मिलता है। इसके चरित्र कल्पना की उपज है और वास्तविकता का आभास देते है। पंजाब अंग्रेजों के कब्जे में कैसे आया इसका सुंदर चित्रण इसमें है।

1.4.4 भीष्मजी के नाटक :-

साहित्यकार जिस परिवेश में रहता है वहाँ के वातावरण का स्वानुभूति के आधारपर कलात्मक चित्रण करता है। इसमें नाटककार की अनुभूति अधिक व्यापक होती है। महेश दर्पण ने भीष्मजी से पुछा था कि रचनात्मक सुख कौनसी विधा में मिलता है तो इसपर भीष्मजी ने कहा था कि "नाटक"।

भीष्म साहनी की पहली नाटय रचना "हानूश" (1977) नाटक है। जिसमें मध्ययुग का एक

भरा-पूरा परिवेश चित्रित किया है। जिसमें कलाकार के संघर्षमय जीवन का चित्रण है। कलाकार, उसका परिवार, उसकी भीषण समस्याएँ, उसका शोषण, उत्पीड़न का सजीव चित्रण कर, यह स्पष्ट किया है कि कलाकार निर्माण में विश्वास करता है विनाश में नहीं। भीष्म साहनी प्राग (चेकोस्लोवाकिया की राजधानी) गए हुए थे। वहाँ उन्होंने ऐतिहासिक मीनारी घड़ी देखी। उस घड़ी के बारे में प्रचलित दन्त कथाएँ भी सुनी थी। घड़ी बनानेवाले कारीगर की आँखे बादशाह ने निकलवा दी थी। इस कारण वह दूसरी घड़ी न बनवा सके। इस किवदन्ती के आधारपर उन्होंने "हानूश" नाटक की रचना की है।

"कबिरा खड़ा बाज़ार में" यह भीष्मजी की दूसरी महत्वपूर्ण नाटयकृति है। ऐतिहासिकता का आभास देकर इस नाटक में आधुनिक युग बोध को उद्घाटित किया है। कबीर के जीवन दर्शन से व्यक्ति मन के द्वंद्व को कलात्मक दृष्टि से चित्रित किया है। कबीर की माँ और पत्नी के चरित्र भी विशेष रुपसे प्रभावी बन गये हैं। कबीर के मुँहफट वृत्ति समाज के ठेकेदारों को पसंद नहीं आती। वे उसके पीठपर कोड़े बरसाते हैं। उसके निशान देखकर माँ का ममता भरा दिल आहत हो उठता है वह उसे चूप रहने के लिए कहती है। कबीर की पत्नी लोई भी कबीर का औदार्य देख उसके पास हमेशा पत्नी बनकर रहने का निश्चय करती है। इन चरित्रों के द्वारा भीष्मजी की कोमल संवेदनाओं का परिचय मिलता है।

"माधवी" नाटक में भीष्मजी ने मध्ययुगीन नारी के साथ होनेवाले अन्याय और शोषण का चित्रण किया है। नारी की संघर्षशील जिजीविषा उद्घाटित कर मानवीयता का आग्रह एवं प्रेरणा इसमें है।

1.4.5 भीष्मजी की अनुवाद कला :-

भीष्मजी एक कुशल अनुवादक भी हैं। उन्होंने सोवियत साहित्य की लगभग 25 कृतियों के अनुवाद किए हैं। साथ ही साथ पंजब के प्रसिध्द साहित्यकारों की कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद किया हैं।

1.4.6 जीवनी साहित्य :-

भीष्मजी ने अपने बड़े भाई बलराज साहनी की जीवनी लिखी है। जिसकी भाषा अंग्रेजी है। उसका नाम है - "बलराज माई ब्रदर" (1981)। उनके अनेक दर्दभरे, आनंदभरे यादों को उन्होंने संकलित कर अपने लेखन कौशल्य का परिचय दिया है।

1.4.7 निबंध :-

"अपनी बात" नामसे उनका एक निबंध संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। इसमें कुछ आत्मपरख,

कुछ आलोचनात्मक कुछ संस्मरणात्मक निबंधों का समावेश हैं। इसमें उपदेशात्मकता ज़रा भी नहीं है। अपने दु:ख, दर्द, अभाव, असफलता, निराशा, सफलता का चित्रण है, साथ ही साथ प्रेमचंद, कबीर, व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की प्रशंसात्मक चर्चा की है।

1.4.8 बाल साहित्य :-

भीष्मजी ने बच्चों के लिए "गुलेल का खेल" और "वापसी" नामक बाल साहित्य की रचना की है। जिसमें जानकारी और संस्कार का दृष्टिकोण है।

1.4.9 अनुवाद :-

भीष्मजी सात वर्षोके लिए भारत सरकार की ओर से सोवियत संघ में अनुवादक के रुप में चले गये। उन्होंने लगभग 20 रुसी पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया है। इसमें टालस्टाय, नकोलाई, आइतमातोव के साहित्यों का समावेश है।

इस प्रकार भीष्म साहनी सफल गद्य साहित्यकार हैं। उनकी मानवीयता अपने साहित्य में अभिव्यक्त होती है।

1.5 निष्कर्ष :-

भीष्म साहनी के इस व्यक्ति जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व को देखने के बाद यह बात स्पष्ट होती है कि वे मानवतावादी लेखक है। उन्होंने मानव को मानव के साथ जुड़ा देने की कोशिश की है। मानव कल्याण की कामना से युक्त उनका साहित्य है। कबीर की मानवता, तथा प्रेमचंद की मानवता का उनपर विशेष प्रभाव है। फिर भी उनकी अपनी शैली भी किसी अन्य लेखक से कम नहीं है। उनके साहित्य में उदात्तता है। धर्म निरपेक्षता की वे माँग करते है, जो आज 20 वी सदी में भी अपना शिर उपर उठाये हुओ है। उसमें जहरिली, अमानवीय, बुरी वृत्तियाँ हैं जो दूसरें लोगों का दमन करती हैं। उसमें स्वार्थान्धता है। भीष्म साहनी ने इन सांप्रदायिक शोकान्त तथा करुणता को गंभीर समस्या के रुपमें चित्रित किया गया है। समाज का पतन और अंधकारपूर्ण शक्तियों का विरोध कर उजाले की कामना की है।

जिस परिवारमें उनका जन्म हुआ वह परिवार संयत तथा उपयुक्त संस्कारों से युक्त था। उसमें राष्ट्राभिमान सर्वोतोपरी माना जाता था। जिस संस्कारों में वे बडे हुए उन संस्कारों से उनका व्यक्तित्व बनता गया जो महान है। उनका व्यक्तित्व सुशील, शान्त, परोपकारी, विनम्र, विनयशील, धैर्य, उदार, कोमल, शालीन, सौम्य, धीरगंभीर, सहिष्णु आदि अनेक गुणों से युक्त हैं। उनके सेवाभावी स्वभाव के कारण मध्यवर्ग की आहें, दु:ख-दर्द से तादात्म्य स्थापित कर उन्हें निपटाने की कोशिश अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने की है।

उन्होंने समाज में व्याप्त झूठी धर्माडम्बरता, स्वार्थान्धता, भेद-भाव, संकीर्ण मनोवृत्तियों का निषेध किया है। मेहनत, धैर्य और लगन के साथ उन्होंने अपने यथार्थवादी साहित्य का निर्माण किया है। इसमें अद्भूत शिल्प का परिचय मिलता है जो अनुशासन से युक्त है। उनके पास समन्वयवादी दृष्टि के साथ ऐतिहासिक दृष्टि का भी परिचय मिलता है। सांप्रदायिकता यह एक ऐसी कल्पना है जो बहुत ही नाजूक है। लेखक की ओर से जरा भी गलती से अनर्थ हो जाने की संभावना रहती है। खास कर उनका "तमस" उपन्यास जो सांप्रदायिकता की शोकान्तिका है और भारत विभाजन के कारणोंको भी स्पष्ट कर देता है। ऐसे नाजूक विषयपर लेखन करने के लिए साहित्यकार के पास आचार, विचारों की तर्क संगता, संयमी वृत्ति एवं धैर्य की आवश्यकता है। यही वृत्ति भीष्मजी की अपनी है। वह अपने कथानक को सहजता के साथ कलात्मक रुप देकर व्यक्त करते है। उनके पास सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति है। एक साधारण सी घटना को वे असाधारण रुप देते हैं। वे समाजजीवन और साहित्य का समन्वय करने में अपनी कुशलता का परिचय देते है। उनकी महानता इसमें है कि वे दूसरों से कुछ न कुछ सीखने की उम्मिद रखते हैं। औरों के सामने स्वयं को छोटा महसूस करते हैं। इसमें ही उनकी महानता स्पष्ट होती है। उनके जो आदर्श हैं, वह हमें जरुर प्रभावित कर देते हैं।

समाज में व्याप्त अंधश्रध्दाएँ, जातीयता, रुढ़ी-परंपरा, छुआछुत आदिको तोडने की कोशिश भीष्मजी ने की है। उत्पीड़ित, गरीब, असहाय, बेसहारा समाज को उन्होंने अपनी सहानुभूतिपूर्ण नजरों से देखा है। जो कारुण्य को उद्घाटित करता है। भीष्मजी के पास जो मानवीय करुणा है वह बहुत ही प्रभावी है। समाज में समन्वयवादी दृष्टि चाहिए। धर्म और राजनीति समाजहीत में बाधक बनती है।

आज समाज की माँग है राष्ट्रीय एकात्मता। विभिन्नता में एकता की आवश्यकता है। परस्पर प्रेम भाव आवश्यक है। लेकिन इन बातोंसे लगता है समाज अछूता है। क्योंकि धर्म के नामपर ऐसी प्रवृत्तियाँ आज अपना स्वार्थ देख रही है, जिससे समाज का विकास नहीं हो रहा है। यही बात भीष्मजी ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से लोगों के सामने प्रस्तुत की है। "तमस" इसका दस्तावेज है। आज भी इसी समस्याओं से ग्रस्त हमारा समाज है, जो अपने अतीत को भूलकर नयी दृष्टि को नकारता है, सर्व धर्म समभाव से वांछित है। भीष्मजी की समानता की दृष्टि जीवन को सुखकारक बनाती है। बच्चों से लेकर बुढ़ोंतक एक दूसरें को आत्मीयता से सलुक करना हमारा मानव धर्म है। यही कामना अपने हृदयसे, मर्मान्तक पीड़ा से स्पष्ट की है।

उनके साहित्य में पारिवारिकता, सामाजिकता, ऐतिहासिकता, आधुनिकता, मनोवैज्ञानिकता, भौतिकता, दार्शनिकता के दर्शन होते हैं, जो उनके व्यक्तित्व के पहलु है। इन संस्कारों में वे पले बड़े हुए है, आहत भी प्रेरित भी हुए हैं।

भीष्मजी के व्यक्तित्व में सादापन है। सहजता है। इमानदारी है। वे अभिनय भी बहुत सुंदर करते हैं। 'तमस' में हरनामसिंह का अभिनय उन्होंने बखूबी निभाया है। उनका चेहरा दिल के भावों को बिना बताये स्पष्ट कर देता है। उसपर जो भोली-भाली मुस्कान फैली रहती है वह दूसरोंको अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। और सहिष्णु भाव का परिचय देती है।

भीष्म जी की अन्तर्दृष्टि मानव मन का उद्घाटन करती है, मन की गहराई एवं आत्मपरकता की खोज करती है। भावुकता, मान-मर्यादा, मानसिकता, उन्माद, उत्पीड़न का शोध उनकी यह दृष्टि करती है। मानव जीवन और मानव मनकी प्रवृत्तियाँ उद्घाटित करनेवाले वे संवेदनशील साहित्यकार है। प्राणायाम, एकाग्रचित्त, ग्लानी, हीनता, दमन, पाप-पुण्य बोध, जड़ता, अहं, तिरस्कार जैसी अनेक दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक वृत्तियोंका चित्रण करने में वे कुशल है। मनोग्रंथीयोंके परिणाम समाजपर कैसे होते है? इसका चित्रण करते है। रीति-नीतियोंका सकारण विवेचन करते है।

युगबोध, व्यक्तिबोध, समाजबोध, धर्मबोध, राष्ट्रबोध, यांत्रिकबोध, मनोबोध, आधुनिकबोध, प्राचीन मध्य युग बोध को वे यथार्थतासे स्पष्ट करते है। जिसमें मनोरंजकता है। व्यंग्यात्मकता है। गांभीर्य है। आर्वाचीन एवं प्राचीन युग का हर आदमी अपने युग, देश, धर्म की नीतिसे प्रभावित है। अपनी संस्कृति के अनुसार उसकी प्रवृत्तियाँ पनपने लगती है।

ब्राहमण, क्षत्रिय, राजा, आर्य, वैश्य, म्लेच्छ, गरीब, श्रीमंत, हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि परंपरावाले पात्र का चरित्रांकन उन्होंने किया है। जो स्वानुभव परक है। उनका संघर्ष, मित्रता, द्वेष, घृणा का चित्रण उन्होंने किया है।

इस प्रकार भीष्म साहनी समग्र परिवेश को चित्रित करनेवाले महान साहित्यकार है। जिन के व्यक्तित्व में महान मानवता के दर्शन होते है। समग्रता की यथार्थ एवं वास्तविक कहानी बताने वाले महान हस्ताक्षर है।

1.6 संदर्भ सूची :-

1) भीष्म साहनी, "अपनी बात" पृ. 10.

2) वही पृ. 10.

3) वही पृ. 17.

4) वही पृ. 11.

5) प्रताप ठाकूर/राजेश्वर सक्सेना, "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना", पृ. 55.

6) भीष्म साहनी, "अपनी बात" पृ. 13.

7) प्रताप ठाकूर/राजेश्वर सक्सेना, "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना", पृ. 37.

8) शीला साहनी, "सारिका", अगस्त 1990, पृ. 18.

9) भीष्म साहनी, "सारिका", अगस्त 1990, पृ. 52.

10) विष्णु प्रभाकर, "सारिका", अगस्त 1990, पृ. 43.

11) नामवर सिंह, "सारिका", अगस्त 1990, पृ. 44.

12) राजेंद्र यादव, "सारिका", अगस्त 1990, पृ. 44.

13) कमलेश्वर, "सारिका", अगस्त 1990, पृ. 45.

14) शानी, "सारिका" अगस्त 1990, पृ. 45.

15) कृष्णा सोबती, सं - ठाकूर/सक्सेना, "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना", पृ. 61.

16) शीला साहनी, सं. ठाकूर/सक्सेना, "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना", पृ. 66-67.

17) शीला साहनी, "सारिका", अगस्त 1990, पृ. 18.

18) भीष्म साहनी, "अपनी बात", पृ. 18.

19) वही पृ. 26.

20) प्रताप ठाकूर/राजेश्वर सक्सेना, "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना", पृ. शुरुआत .

21) भीष्म साहनी, "अपनी बात", पृ. 26-27.

- - -